RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-09
September-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i09.011

ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं के सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (तहसील द्वारा हाट के विशेष संदर्भ में)

योगेश मैनाली

शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखण्ड

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 September 2020

Keywords
ग्रामीण क्षेत्र, अनुसूचित जाति की महिलाएं, सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा का प्रभाव, सामाजिक जीवन एवं सामाजिक स्थिति।

***Corresponding Author**
Email: yogesh928[at]gmail.com

ABSTRACT

भारत में शिक्षा का महत्व प्राचीनतम सभ्यताओं से चला आ रहा है। जिसमें शिक्षा की पहली किरण देखी, रची और संजोयी गयी थी। यह शिक्षा चाहे आदिम जमाने की खेती से लेकर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की तकनीक की हो, जीवन व्यवहार के प्रतिमानों की हो, सामाजिक सम्बन्धों की हो या समाज को जानने की हो। भारत को शिक्षा का पालना कहा जाता है। भारत की आत्मा गाँवों में निवास करती है तथा गाँवों में रहने वाले लोग परम्परावादी होते हैं। आज गाँवों का नगरों से जुड़ने के कारण गाँवों में सदियों से चली आ रही संकीर्ण जाति व्यवस्था में परिवर्तन की प्रक्रिया के सकारात्मक संकेत मिल रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं में शिक्षा से पड़े प्रभावों का ही परिणाम है कि उनके सामाजिक जीवन के साथ–साथ खानपान, रहन–सहन, व्यवहार प्रतिमानों एवम् उनकी प्रस्थिति में परिवर्तन दिखाई देते हैं। यह कहना अतिश्योक्ति न हो गया कि ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं में परिवर्तन लाने, उनमें आत्म–विश्वास की चिंगारी पैदा करने, समाज की मुख्यधारा से जोड़ने तथा उनकी सामाजिक स्थिति में उन्हें सम्मान दिलाने में शिक्षा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्रस्तावना–

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। प्रत्येक समाज में चाहे वह ग्रामीण समाज हो या नगरीय समाज, परिवर्तन होते रहते हैं। समाज के किसी क्षेत्र में होने वाले परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहते हैं। परिवर्तन या समाज के समस्त ढाँचे में आ सकता है अथवा समाज के किसी विशेष पक्ष तक ही सीमित हो सकता है। कोई भी समाज सदैव एक जैसा नहीं रह सकता है। पहले गाँवों की सामाजिक व्यवस्था, भाईचारा, जाति एवं स्थानीयता पर आधारित होती थी। परिवार वंश एवं जाति से जुड़ा हुआ था। परन्तु आज उसमें परिवर्तन हो रहा है। प्रो0 एस.सी. दुबे ने 'कन्टेमप्रेरी इंडिया एण्ड इट्स मॉडर्नाइजेशन' में परिवार, जाति, स्थानीयता एवं धर्म में परिवर्तन के सम्बन्ध में उल्लेख किया है। भारतीय समाज में अनुसूचित जाति की महिलाओं के विकास एवम् उनमें परिवर्तन की प्रक्रियाएं भारत की आजादी के पूर्व से ही चल रही हैं। स्वतंत्रता के बाद अनुसूचित जाति की महिलाओं की स्थिति में सुधार की दिशा के लिए किये जाने वाले प्रयासों ने जोड़ पकड़ा है। अनुसूचित जाति की महिलाओं को राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़कर विकास की गति को तेज करने के लिए निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं में सामाजिक परिवर्तन के कारक के रूप में शिक्षा ने ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक– आर्थिक, सामाजिक–राजनैतिक, सामाजिक–व्यवसायिक तथा सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन को परिवर्तित कर उनमें परिवर्तन किया है। अनुसूचित जाति के लोगों के सशक्तिकरण के लिए वर्तमान मोदी सरकार द्वारा चलाई जा रही शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, शौचालय, बिजली, पानी, विधवा पेंशन, छात्रवृत्ति, स्वरोजगार, उज्जवला गैस आदि योजनाओं ने ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक, शैक्षणिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक स्थिति में सकारात्मक प्रभाव डालकर उनको परिवर्तन की दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पूर्व अध्ययन–

प्रस्तुत अध्ययन के तहत ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं के सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा के योगदान के विषय में अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर उपरोक्त तथ्यों से संबंधित हुए पूर्व अध्ययनों की जानकारी प्राप्त कर अध्ययन को वैज्ञानिक रूप में प्रस्तुत करने तथा शोध को उचित दिशा प्रदान करने के लिए संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन करने का प्रयास किया है। धवन, एस. (1983) ने 'सोशल मोबिलिटी एंड सोशल चेंज : ए स्ट्डी बेस्ड ऑन रैगाइस ऑफ देहली', सिंह, राठौर जगदीश (1994) ने 'अनुसूचित जाति के युवाओं के परिवर्ती दृष्टिकोण', पवाडे, के0 (1995) ने 'दी पोजिशन ऑफ दलित वूमन्स इन इंडियन सोसायटी', अग्रवाल, कुन्तल (1996) ने 'चेन्जिंग न्यू ऑन मैरिज : ए स्टडी ऑफ कालेज गोइंग ग्लर्स इन अर्बन एरिया', डिलीज, रोबर्ट (1996) ने 'दी वर्ल्ड ऑफ अनटचेवल्स', मोतीयानी, पुष्पा (1998) ने 'महिला विकास की नई दिशाएं', चानना, करूणा (2001) ने 'इन्ट्रोगेटिंग वूमन्स एजूकेशन',

RRIJM 2015, All Rights Reserved

बॉन्डेड बिजनेस, एक्सपेन्डिंग होरिजन, कुमार, अभिमन्यु और बसेरा प्रज्ञा (2002) ने 'द स्टडी ऑफ सोशल मोबिलिटी अमंग शेड्यूल कास्ट ऑफ ब्लॉक मोदीनगर इन गाजियाबाद डिस्ट्रिक ऑफ उत्तर प्रदेश इंडिया', मिश्रा, नारायण, 'एक्सप्लोटेशन एण्ड एट्रोसिटिक ऑन दलित्स इन इंडिया' गुप्ता, दीपांकर (2005) ने 'विदरिंग द इंडियन विलेज कल्चर एंड एग्रीकल्चर इन रूरल इंडिया', शाह, घनश्याम, हर्ष मंदर, सुखदेव थोराट, सतीश देश पांडे और अनिता बाबिस्कर (2006) ने 'अनटचबिलिटी इन रूरल इंडिया' कुमार सुमन (2016)ने अनुसूचित जातियों में 'सामाजिक परिवर्तन' में अनुसूचित जाति की महिलाओं में सामाजिक, आर्थिक, व्यवसायिक, शैक्षिक और राजनैतिक आधार पर गतिशीलता आई है, बताया है। शिक्षा का ही परिणाम है कि आज ग्रामीण क्षेत्रों में अनुसूचित जाति की महिलाओं का विभिन्न जातियों के लोगों के बीच समन्वय के साथ–साथ उनके जीवन में गतिशीलता एवं परिवर्तन देखने को मिल रहा है।

अध्ययन क्षेत्र–

प्रस्तुत शोध कार्य उत्तराखण्ड राज्य अल्मोड़ा जिले के तहसील द्वाराहाट के ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं में सामाजिक परिवर्तन पर केन्द्रित है। उत्तराखण्ड (पूर्व नाम उत्तराँचल) उत्तर भारत में स्थित एक राज्य है, जिसका निर्माण 9 नवम्बर 2000 को कई वर्षो के आन्दोलन के पश्चात् भारत गणराज्य के 27वें राज्य के रूप में किया गया था। जनवरी 2007 में स्थानीय लोगों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए राज्य का अधिकारिक नाम उत्तराँचल से बदल कर 'उत्तराखण्ड' कर दिया गया। द्वाराहाट तहसील उत्तराखण्ड राज्य की अल्मोड़ा जनपद की एक तहसील है। तहसील द्वाराहाट तहसील द्वाराहाट में कुल 204 ग्राम हैं, जिनमें 173 ऐसे गाँव हैं, जिनमें परिवारों की संख्या 100 से कम है। 25 गाँव ऐसे हैं, जिनमें परिवारों की संख्या 100–200 के मध्य है। जबकि मात्र 6 गाँव ऐसे हैं, जिनमें परिवारों की संख्या 200 से अधिक है। उपरोक्त ग्रामों में से 3 गाँवों को दैव–निदर्शन की लॉटरी पद्धति द्वारा चयन किया गया, चयनित ग्रामों की सूची निम्नवत् है–

तालिका 1.1

अध्ययन हेतु चयनित गाँवों का विवरण

क्रं.सं.	गाँव का नाम	अनुसूचित जाति के परिवारों की संख्या	जनसंख्या
1.	बिजेपुर	53	227
2.	मल्ली मिरई	147	762
3.	सलना	51	256

इस प्रकार स्पष्ट है कि बिजेपुर के 53, मल्ली मिरई के 147 तथा सलना ग्राम से 51 परिवारों को अध्ययन हेतु चयन किया गया इस प्रकार कुल 251 परिवार अध्ययन हेतु निदर्श हैं।

शोध अभिकल्प–

प्रस्तुत अध्ययन में विवरणात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाओं में शिक्षा से पड़े प्रभावों का अध्ययन करना, 2. ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाओं पर शिक्षा से उनके सामाजिक जीवन पर पड़े प्रभावों का अध्ययन करना, 3. ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं के परिवर्तन में जिम्मेदार सहायक व्यवस्थाओं का अध्ययन करना, 4. शिक्षा से ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर पड़े प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध उपकरण–

प्राथमिक आंकड़ों के लिए साक्षात्कार अनुसूचित एवं द्वैतीयक आंकड़ों के लिए शासकीय, अर्द्ध–शासकीय प्रकाशनों, इंटरनेट, रिसर्च जर्नल्स, शोध पत्र, जनगणना आंकड़े एवं पुस्तकें आदि।

तथ्य विश्लेषण–

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु संकलित तथ्यों के आधार पर निम्नलिखित तथ्यों को उद्घाटित किया गया है।

शिक्षा से उत्तरदाताओं पर पड़े प्रभावों के आधार पर वर्गीकरण–

शिक्षा एक ऐसा अभिकरण है, जो समाज में उपस्थित असमानता की गहरी जड़ों को उखाड़ देती है। शिक्षा असमानता पर आधारित पारस्परिक मूल्यों के स्थान पर समानता को स्वीकार करने वाले नये मूल्यों को स्थापित करती है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त आधार है। ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाओं के विकास में शिक्षा के द्वारा अनेक परिवर्तन हुए हैं। शिक्षा से ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाओं पर पड़े प्रभावों को निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका – 1.2

शिक्षा से उत्तरदाताओं पर पड़े प्रभावों के आधार पर वर्गीकरण

क्रं0 सं0	शिक्षा से पड़े प्रभावों के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की राय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	शिक्षा से जीवन स्तर में सुधार हुआ है।	146	58.17
2.	शिक्षा से समाज में जातिगत् व लौगिंक असमानता दूर हुई है।	53	21.12
3.	शिक्षा से समाज में व्याप्त कुरूतियाँ समाप्त हुई हैं।	29	11.55
4.	कोई उत्तर नहीं।	23	9.16
कुल योग		**251**	**100**

RRIJM 2015, All Rights Reserved

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सामाजिक परिवर्तन के कारक के रूप में शिक्षा द्वारा उत्तरदाताओं पर पड़े प्रभावों के सम्बन्ध में 58.17 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि शिक्षा से उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ है। 21.12 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा शिक्षा से समाज में जातिगत् व लैगिंक असमानता दूर हुई है। 11.55 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने शिक्षा से समाज में व्याप्त कुरूतियाँ समाप्त हुइ हैं, बताया है। 9.16 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने शिक्षा के प्रभाव के सम्बन्ध में अपना कोई उत्तर नहीं दिया है।

शिक्षा से सामाजिक जीवन पर पड़े प्रभावों के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण–

शिक्षा सामाजिक जीवन में गतिशीलता के लिए योग्यता प्रदान करती है। साथ ही बुद्धिजीवियों, विशेषज्ञों तथा तकनीकी विशेषज्ञों के वर्गों में प्रवेश पाने हेतु नये अवसर प्रदान करती है। शिक्षा मूल्यों तथा धारणाओं एवं विश्वासों को परिवर्तित कर आधुनिकीकरण का मार्ग प्रशस्त करती है। जैसे–जैसे शिक्षा का प्रचार–प्रसार होते गया, समाज में व्यक्तियों की प्रस्थिति, दृष्टिकोण, रहन–सहन, खानपान एवं रीति–रिवाजों में परिवर्तन हुआ है, जिससे सम्पूर्ण समाज का स्वरूप ही बदल गया है। अनुसूचित जाति की महिलाओं के सामाजिक जीवन पर शिक्षा से पड़े प्रभावों को निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका – 1.3

शिक्षा से सामाजिक जीवन पर पड़े प्रभावों के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्रं0 सं0	शिक्षा से सामाजिक जीवन पर पड़े प्रभाव के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की राय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	शिक्षा से सामाजिक जीवन परिवर्तित हुआ है।	203	80.88
2.	शिक्षा से जीवन परिवर्तित नहीं हुआ है।	31	12.35
3.	कोई उत्तर नहीं।	17	6.77
कुल योग		**251**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि शिक्षा द्वारा ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं के सामाजिक जीवन पर पड़े प्रभावों के सम्बन्ध में 80.88 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि शिक्षा से उनका सामाजिक जीवन परिवर्तित हुआ है। 12.35 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में कहा कि शिक्षा से उनका सामाजिक जीवन परिवर्तित नहीं हुआ है। 6.77 उत्तरदाताओं ने शिक्षा द्वारा सामाजिक जीवन पर पड़े प्रभावों के सम्बन्ध में अपना कोई उत्तर नहीं दिया है।

ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाओं के परिवर्तन में जिम्मेदार सहायक व्यवस्थाओं के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण– ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं में परिवर्तन के लिए जिम्मेदार व्यवस्थाओं में अनेक कारकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिनमें आधुनिक शिक्षा, संचार, सरकारी सहायता एवं सामाजिक विधान प्रमुख हैं। आधुनिक शिक्षा जैसे– विज्ञान, इंजीनियरिंग, चिकित्सा आदि ने व्यक्ति की कुशलता में वृद्धि की है। ग्रामीण समाज में आज शिक्षा के माध्यम से तार्किक मूल्यों का समावेश हो रहा है, जिससे गाँवों में सामाजिक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिला उत्तरदाताओं से जब उनके विकास में सहायक एवं परिवर्तन में जिम्मेदार सहायक व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में पूछा गया तो उनके द्वारा इस सम्बन्ध में अलग–अलग राय दी गई है। उनके द्वारा परिवर्तन में सहायक जिम्मेदार व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में दी गई राय को निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका – 1.4

ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाओं के परिवर्तन में जिम्मेदार सहायक व्यवस्थाओं के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्रं0 सं0	परिवर्तन में सहायक जिम्मेदार व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की राय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	आधुनिक शिक्षा परिवर्तन में जिम्मेदार सहायक व्यवस्था है।	150	59.76
2.	सरकारी सहायता परिवर्तन में जिम्मेदार सहायक व्यवस्था है।	76	30.28
3.	व्यवसायिक गतिशीलता परिवर्तन में जिम्मेदार सहायक व्यवस्था है।	25	9.96
कुल योग		**251**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि परिवर्तन में सहायक व्यवस्थाओं के आधार पर 59.76 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि आधुनिक शिक्षा उनके परिवर्तन में सहायक व्यवस्था है। 30.28 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि सरकारी सहायता उनके परिवर्तन में सहायक व्यवस्था है। 9.96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि व्यवसायिक गतिशीलता से उनके जीवन में परिवर्तन आया है।

शिक्षा द्वारा अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर पड़े प्रभावों के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण– ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं में शिक्षा प्राप्ति के द्वारा सामाजिक गतिशीलता बढ़ी है। शिक्षा परिवर्तन, गतिशीलता एवं सर्वांगीण विकास का माध्यम बनती है। शिक्षा ने वर्तमान समय में औद्योगिक विकास, आर्थिक संरचना, व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। टी. रेमाउण्ट ने 'मॉडर्न एजूकेशन' में शिक्षा को विकास की एक प्रक्रिया कहा है, जिसमें मनुष्य बचपन से प्रौढ़ावस्था तक अनेक तरीकों से अपने भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पर्यावरण से अनुकूलन करना सीखता है। शिक्षा द्वारा ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर पड़े प्रभावों के सम्बन्ध में जब उत्तरदाताओं से प्रश्न किया गया कि शिक्षा द्वारा आपकी सामाजिक स्थिति पर क्या प्रभाव पड़े हैं तो उनके द्वारा

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अलग–अलग राय इस सम्बन्ध में दी गई है। उनके द्वारा दी गई राय को निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका – 1.5
शिक्षा द्वारा अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर पड़े प्रभावों के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्रं0 सं0	शिक्षा द्वारा सामाजिक स्थिति पर पड़े प्रभावों के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की राय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	शिक्षा नौकरी प्राप्ति में सहायक है।	76	30.28
2.	शिक्षा जीवन स्तर के सुधार में सहायक है।	79	31.47
3.	शिक्षा सामाजिक सम्मान के बढ़ोत्तरी में है।	68	27.09
4.	शिक्षा आर्थिक जागरूकता में सहायक है।	28	11.16
कुल योग		**251**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि शिक्षा द्वारा सामाजिक स्थिति पर प्रभाव के सम्बन्ध में 30.28 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि शिक्षा उनकी नौकरी प्राप्ति में सहायक है। 31.47 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने शिक्षा द्वारा जीवन स्तर में सुधार बताया। 27.09 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया कि शिक्षा से उनके सामाजिक सम्मान में बढ़ोत्तरी हुई है। 11.16 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि शिक्षा द्वारा उनमें आर्थिक जागरूकता बढ़ी है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन से ज्ञात होता है कि वर्तमान समय में शिक्षा के कारण ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन हुआ है। ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाएं अब समाज में व्याप्त सामाजिक समस्याओं, कुरीतियों, जाति–प्रथा, रूढ़ियों एवम् अंधविश्वासों से किनारा कर शिक्षा की मदद से विकास की मुख्यधारा से जुड़ कर परिवर्तन को गति दे रही हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

[1]. https://hi.m.wikipedia.org, 'सामाजिक परिवर्तन'।
[2]. दुबे, एस.सी. (1974), 'कन्टेम्परेरी इंडिया एण्ड इट्स मॉडर्नाइजेशन', विकास पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
[3]. अटल, योगेश (2006), 'चेन्जिंग इंडियन सोसाइटी'; रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
[4]. धवन, एस. (1983) 'सोशल मोबिलिटी एंड सोशल चेंज : ए स्ट्डी बेस्ड ऑन रैगाइस ऑफ देहली'।
[5]. सिंह, राठौर जगदीश (1994) 'अनुसूचित जाति के युवाओं के परिवर्ती दृष्टिकोण', सुमन प्रकाशन शाहदरा, दिल्ली।
[6]. पवाडे, के0 (1995) 'दी पोजिशन ऑफ दलित वूमन्स इन इंडियन सोसायटी'।
[7]. अग्रवाल, कुन्तल (1996), 'चेन्जिंग न्यू ऑन मैरिज : ए स्टडी ऑफ कालेज गोइंग ग्लर्स इन अर्बन एरिया'।
[8]. डिलीज, रोबर्ट (1996), 'दी वर्ल्ड ऑफ अनटचेवल्स'।
[9]. मोतीयानी, पुष्पा (1998), 'महिला विकास की नई दिशाएं', कनावटी पब्लिकेशन, अहमदाबाद।
[10]. चानना, करूणा (2001), 'इन्ट्रोगेटिंग वूमन्स एजूकेशन', बॉन्डेड बिजनेस, एक्सपेन्डिंग होरिजन, न्यू दिल्ली, रावत पब्लिकेशन।
[11]. कुमार, अभिमन्यु और बसेरा प्रज्ञा (2002), 'द स्टडी ऑफ सोशल मोबिलिटी अमंग शेड्यूल कास्ट ऑफ ब्लॉक मोदीनगर इन गाजियाबाद डिस्ट्रिक ऑफ उत्तर प्रदेश इंडिया'।
[12]. श्रीवास्तव, बी.एन. 'प्रोटक्टिव डिस्क्रीमिनेशन इन दी कॉन्सटिट्यूशन ऑफ इंडिया'।
[13]. मिश्रा, नारायण, 'एक्सप्लोटेशन एण्ड एट्रोसिटिक ऑन दलित्स इन इंडिया'।
[14]. गुप्ता, दीपांकर (2005), 'विदरिंग द इंडियन विलेज कल्चर एंड एग्रीकल्चर इन रूरल इंडिया'।
[15]. शाह, घनश्याम, हर्ष मंदर, सुखदेव थोराट, सतीश देश पांडे और अनिता बाबिस्कर (2006), 'अनटचबिलिटी इन रूरल इंडिया', सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
[16]. कुमार सुमन (2016)ने अनुसूचित जातियों में 'सामाजिक परिवर्तन'।
[17]. https://www.censusindia.2011.com द्वाराहाट तहसील पोपूलेशन, रिलिजन, कास्ट अल्मोड़ा डिस्ट्रिक, उत्तराखण्ड।
[18]. Towns and villages in dwarahat tehsil almora, census 2011.co.in.